भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि एवं किसान कल्याण विभाग
वनस्पति संरक्षण, संगरोध एवं संग्रह निदेशालय

ई- समाचार पत्रिका

प्रति संख्या 3/2022-23 जनवरी - मार्च 2023

वनस्पति संरक्षण सलाहकार की कलम से....

2022-23 की अवधि के दौरान निदेशालय ने सभी लक्ष्य हासिल करने के साथ ही कई नई पहलों की शुरुआत की जिसमे प्रमुखत: क्रॉप-पोर्टल, पी.क्यू.एम.एस-पोर्टल एवं ई-ऑफिस का शुभारम्भ, वैश्विक बाजारों में भारतीय कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए नए अवसर की प्राप्ति, निदेशालय कर्मियों तथा हितधारकों के लिए त्रैमासिक "ई - समाचार पत्रिका" का प्रकाशन , मानव संसाधन विकास के उद्देश्य से निदेशालय में नए प्रभाग "क्षमता निर्माण इकाई"(CBU) एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक/ पादप स्वच्छता से जुडे मुद्दों पर निरंतर निगाह बनाये रखने के लिए "अंतर्राष्ट्रीय वनस्पति संरक्षण सम्मलेन और कोडेक्स सेल" (IPPC & Codex Cell) का गठन महत्पूर्ण उपलब्धि रही।

इसके साथ ही निदेशालय द्वारा विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों, अंतर्राष्ट्रीय वनस्पति संरक्षण सम्मलेन (IPPC) एवं एशिया पैसिफिक प्लांट प्रोटेक्शन कमीशन (APPPC) की बैठकों में भाग लिया गया। 7-11 नवंबर, 2022 के दौरान बैंकाक, थाईलैंड में आयोजित APPPC के 32वें सत्र में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से भारत को अगले द्विवार्षिक के लिए IPM स्थायी समिति की अध्यक्षता के लिए चुना और निर्णय लिया गया कि आम के फल मक्खियों के प्रबंधन के लिए सिस्टम एप्रोच पर कार्यशाला भारत में आयोजित की जाएगीं।

27-31 मार्च, 2023 के दौरान रोम, इटली में आयोजित IPPC के पादप स्वच्छता आयोग (CPM) के सत्रहवें सत्र में श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (पीपी) एवं डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। सत्र के दौरान अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में नाशीजीव के प्रसार को रोकने और पादप स्वच्छता उपायों जैसे मुद्दों पर चर्चा कर महत्पूर्ण योगदान किया गया।

माननीय प्रधानमंत्री द्वारा शुरू किए गए मिशन मोड भर्ती अभियान के अनुपालन में किए गए प्रयास के परिणाम स्वरूप वर्ष 2022-23 के दौरान नए अधिकारी/कर्मचारी निदेशालय में नियुक्त हुए।

हमारे समन्वित प्रयासों ने एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन तकनीक को अपनाने के लिए किसानों के बीच सकारात्मक प्रभाव डाला है, जो अंततः रासायनिक कीटनाशकों के विवेकपूर्ण उपयोग के साथ-साथ कृषि लागत को कम करने का मार्ग प्रशस्त करता है। किसानों, कृषि इनपुट डीलरों और कृषि विस्तार अधिकारियों के बीच आई जागरूकता की वजह से अनुशंसित कीटनाशकों के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग एवं विभिन्न स्तरों पर इनपुट के उचित उपयोग के प्रति बेहतर समझ विकसित हुई है। इसके साथ ही फसलों में हुए नाशीजीव के व्यापक आक्रमण जैसे- कपास में सफेद मक्खी, थ्रीप्स, जैसिड एवं गुलाबी सुंडी, चावल में वायरस जनित बौनापन बीमारी और केले में ककड़ी मोजेक वायरस के सफल प्रबंधन में निदेशालय ने महत्पूर्ण तकनीकी योगदान किया।

निदेशालय ने कृषि उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाने के लिए पादप स्वच्छता से संबंधित पैक हाउस, प्रसंस्करण इकाईयों, उपचार सुविधाओं एवं पादप स्वच्छता एजेंसियों के लिए दिशा-निर्देश जारी करने एवं प्रमाणीकरण में सतत योगदान कर रहा हैं। पादप स्वच्छता निरीक्षण की रिपोर्टिंग के लिए मोबाइल ऐप का उपयोग, ई-फाइटो का शुभारंभ और पादप स्वच्छता एजेंसी को शुरू करने जैसे महत्वपूर्ण उल्लेखनीय कार्य इस अवधि में हुए हैं।

किसानों के लिए प्रभावी एवं सुरक्षित कीटनाशकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने की दिशा में केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति, केंद्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला एवं क्षेत्रीय नाशीजीव जांच प्रयोगशाला द्वारा भी इस दौरान काफ़ी महत्पूर्ण कार्य किये गए।

अनेक कारणों से पर्यावरण में हो रहें बदलाव, जलवायु परिवर्तन के कारण फसलों पर हो रहें दुष्प्रभाव नई किस्मों का उपयोग, पेस्ट स्टेटस में परिवर्तन तथा नए नाशीजीवों के बढतें आक्रमण जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए निदेशालय पूरी तरह से प्रतिबद्ध है और राज्यों के कृषि/बागवानी विभाग , भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनुसंधान संस्थानों, राज्य कृषि विश्वविद्यालय (SAU) और अन्य संबंधित एजेंसियां के साथ मिलकर लगातार कार्य किया जा रहा हैं।

निदेशालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति के लिए किए गए अथक परिश्रम एवं समर्पण की सराहना करता हूँ। साथ ही निदेशालय के विभिन्न कार्यक्रमों/गतिविधियों को लागू करने के लिए प्राप्त निरंतर समर्थन, प्रोत्साहन एवं मार्गदर्शन के लिए कृषि एवं किसान मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

- डॉ. जे. पी. सिंह
वनस्पति संरक्षण सलाहकार

सूची:

- प्रमुख कार्यक्रम
- अंतर्राष्ट्रीय सहभागिता
- द्विपक्षीय फाइटोसेनेटरी समझौता
- प्रशिक्षण और कार्यशालाएं
- विशिष्ट उपलब्धि एवं समारोह
- प्रकाशन
- मीडिया कवरेज
- सफलता गाथा

नई नियुक्तियां:

जनवरी से मार्च, 2023 की तिमाही के दौरान निदेशालय में कुल 34 नए लोगों ने सहायक पौध संरक्षण अधिकारी, तकनीकी सहायक, मल्टी-टास्किंग स्टाफ, डाटा प्रोसेसिंग सहायक और निम्न श्रेणी लिपिक के रूप में योगदान दिया ।

प्रमुख कार्यक्रम

एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन के प्रयास:

- इस अवधि के दौरान 2.96 लाख हेक्टेयर फसल क्षेत्र का सर्वेक्षण किया गया और महत्वपूर्ण नाशीजीवों के प्रबंधन के लिए 03 परामर्शिकाएं जारी किए गए।
- रबी सीजन के दौरान कुल 230 किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया गया जिसमें 8050 किसानों और राज्य कृषि विभाग के कर्मचारियों को आईपीएम पर प्रशिक्षण दिया गया ।
- नाशीजीव प्रबंधन के लिए 0.55 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 1144.42 मिलियन जैवनियन्त्रण कारक- जारी किए गए।
- 2.27 लाख हेक्टेयर से अधिक क्षेत्र में जैव- नियंत्रण कारकों का सफलतापूर्वक संरक्षण किया गया।
- कुल 47 "दो दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम" आयोजित किए गए जिसमें 25,777 कृषि विस्तार अधिकारी, गैर सरकारी संस्था, अग्रणी किसान, निजी उद्यमी को IPM उपायों पर प्रशिक्षित किया गया।
- कुल छह "पांच दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम" आयोजित किए गए जिसमें विभिन्न राज्यों के 243 कृषि विस्तार अधिकारी को आईपीएम उपायों पर प्रशिक्षित किया गया।

वनस्पति संगरोध (केन्द्रों द्वारा किए गए प्रयास):

- कृषि उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाने में सहयोग करते हुए 150.29 लाख मीट्रिक टन कृषि उत्पादों के निर्यात लिए कुल 1,56,629 पादप स्वच्छता प्रमाणपत्र जारी किये गए।
- 40.30 लाख मीट्रिक टन आयातित कृषि उत्पादों का निरीक्षण उपरांत कुल 30,730 आयात निगमन मंजूरी जारी की गई।
- प्रभावी पादप संगरोध निरीक्षण प्रणाली के माध्यम से आयातित कृषि उत्पादों में 180 संगरोध कीटनाशकों का पता लगाकर भारत में प्रवेश को रोकने में सफलता मिली ।
- पादप स्वच्छता मुद्दों पर अन्य देशों के साथ सफलतापूर्वक बातचीत कर भारतीय कृषि उत्पादों के निर्यात के लिए दो नए बाजार प्राप्त किए।

राजभाषा हिन्दी :

माननीय सांसद, प्रो. रीता बी जोशी की अध्यक्षता में राजभाषा की संसदीय समिति ने 17.01.2023 को मंत्रालय एवं विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में क्षेत्रीय पादप संगरोध केंद्र, मुंबई का राजभाषा में किए गए हिंदी के कार्यों की समीक्षा की।

राजभाषा संबंधी संसदीय समिति की उपसमिति द्वारा दिनांक 25.02.2023 को एल.सी.ओ., बीकानेर का राजभाषा में किये कार्यों का निरीक्षण किया गया।

टिड्डी चेतावनी संगठन (LWO/LCO/FSIL द्वारा किए गए प्रयास):

- रेगिस्तानी टिड्डी सर्वेक्षण 28.41 लाख हेक्टेयर में किया गया एवं तिमाही के दौरान भारत और पड़ोसी देशों में टिड्डियों की मौजूदा स्थिति पर प्रकाश डालते हुए टिड्डी सूचना बुलेटिन प्रकाशित और प्रसारित 06 किए गए।

केंद्रीय कीटनाशक प्रयोगशाला, क्षेत्रीय नाशीजीव जांच प्रयोगशाला और तकनीकी विधायी अनुभाग:

- RPTL के द्वारा कुल 498 नाशीजीवनाशकों के नमूनों का परीक्षण किया गया इनमें से 18 को निम्न मानक (Misbranded) घोषित किया गया।
- सी.आई.एल. ने 521 नाशीजीवनाशकों के नमूनों का परीक्षण किया, जिनमें से 112 निम्न मानक (Misbranded) के पाए गए।

केंद्रीय कीटनाशक बोर्ड एवं पंजीकरण समिति:

- पंजीकरण समिति के द्वारा कुल 46,279 नाशीजीवनाशकों के लिए पंजीकरण प्रमाण पत्र जारी किया गया जिसमें 52 नए रासायनिक अणुओ (Molecules) के लिए जारी हुए ।

योजना और समन्वय इकाई:

- निदेशालय के 25 नवनियुक्त कर्मचारियों को राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान (NIPHM) हैदराबाद में प्रारंभिक / परिचयात्मक प्रशिक्षण दिया गया।
- तिमाही के दौरान कुल 46 RTI अनुरोध एवं 64 शिकायत/ परिवाद का समाधान किया गया।

पादप स्वच्छता आयोग (CPM) का 17वाँ सत्र

IPPC के शासी निकाय "पादप स्वच्छता आयोग (CPM)" के सत्रहवें सत्र का आयोजन रोम, इटली में दिनांक 27-31 मार्च 2023 के दौरान हुआ. इस महत्वपूर्ण सम्मलेन श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (पीपी) एवं डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। सत्र के दौरान चार ISPM- 5, 18, 20 और 28 संशोधनों को स्वीकृति देने के साथ

के साथ ही विभिन्न राष्ट्रीय और क्षेत्रीय पादप संरक्षण संगठनों (NPPOs, RPPOs) के संचार योजना में सहयोग एवं मार्गदर्शन के उद्देश्य से IPPC संचार रणनीति 2023-2030 को भी अनुमोदित किया गया ।

एशिया पैसिफिक सीड एसोसिएशन (ASPA) के पादप स्वच्छता विशेषज्ञ परामर्श का 9वाँ सत्र

07 से 09 मार्च, 2023 के दौरान बैंकाक, थाईलैंड में आयोजित 9वें ASPA फाइटोसैनिटरी विशेषज्ञ परामर्श में डॉ. मीर समीम अख्तर, उप निदेशक (की.वि.) और डॉ. एस. शिवराम कृष्णन, स. निदेशक (की.वि.) ने भाग लिया। डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़ कर बीजों के निर्बाध निर्यात-आयात के लिए पौध संगरोध विनियमन विषय पर विशिष्ट व्याखान दिया।

ए.एस.पी.ए. विशेषज्ञ परामर्श के 9वें बैठक का परिणाम ISPM-38 (बीजों का अंतर्राष्ट्रीय संचलन) और ISPM-45 के माध्यम से लागू कर राष्ट्रीय पादप संरक्षण संगठनों को एशिया प्रशांत क्षेत्र में फाइटोसैनिटरी क्रियाओं को करने के लिए अधिकृत करेगा।

भारत में पहला सफल जैविक नियंत्रण एक संयोग !!!!

कोचिनियल व्यापार के लिए बाहर से लाये गए कांटेदार कैक्टी कुछ ही समय में उत्तर और दक्षिण भारत में गंभीर खरपतवार बन गया ।

1795 में ब्राजील से वाणिज्यिक डाई का उत्पादन करने के लिए डैक्टाइलोपियस कैक्टि का आयात के दौरान भूलवश डैक्टाइलोपियस सीलोनिकस का भारत में प्रवेश हो गया।

डी. सिलोनिकस से तैयार हुई डाई की क्वालिटी काफी ख़राब थी, परिणामस्वरूप डाई बनाने वाली फैक्ट्रियां बंद हो गईं , लेकिन समस्या बन चुके कांटेदार कैक्टी पर डी. सिलोनिकस का व्यापक प्रभाव पड़ा और छह वर्षों के अन्दर ही प्रभावित भूमि खेती के लिए उपयुक्त हो गई।

पादप रोगजनकों के लिए अलगाव तकनीक का प्रदर्शन।

कृषि उत्पाद निरीक्षण के दौरान प्राथमिक और प्रतिनिधि नमूने लेने का प्रदर्शन।

डॉ. अब्राहम वर्गीस, अध्यक्ष रशवी आईपीआरएस (पूर्व निदेशक, आईसीएआर-एनबीएआईआर एवं पूर्व प्रधान वैज्ञानिक, ICAR-IIHR) द्वारा अतिथि व्याख्यान ।

मिट्टी और पौधों के नमूनों से निमाटोड निष्कर्षण विधि का प्रदर्शन ।

प्रशिक्षुओं द्वारा पादप स्वच्छता निरीक्षण पर अभ्यास ।

जनवरी से मार्च 2023 के दौरान पादप संगरोध विषय पर विभिन्न क्षेत्रीय पादप संगरोध केन्द्रों यथा- मुंबई, चेन्नई, कांडला, बेंगलुरु, नई दिल्ली और कोलकाता में दो दिवसीय क्षमता निर्माण प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। ये सभी प्रशिक्षण हाइब्रिड मोड में आयोजित किए गए थे और प्रशिक्षुओं को पादप संगरोध के नियमों एवं विनियमों, निरीक्षण प्रक्रियाओं, नाशीजीव पहचान तकनीक तथा पादप संगरोध से संबंधित अन्य विषयों के बारे में जानकारी दी गयी । आयोजित प्रशिक्षण के माध्यम से निदेशालय, राज्य कृषि विभाग, पी.एस.एस.पी एवं पी.एस.एस.ए. के कुल 259 प्रशिक्षुओं को पादप संगरोध के विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

इतिहास के पन्नों से .....

समय के साथ वनस्पति संगरोध _ _ _ _

1906

पहला वनस्पति संगरोध गतिविधि

खतरनाक मैक्सिकन कॉटन बॉल वीविल (एंथोनोमस ग्रैंडिस) के भारत में प्रवेश को रोकने के उद्देश्य से भारत सरकार द्वारा आयातित कपास की गांठों का अनिवार्य धूमन करने का आदेश जारी किया गया ।

1914

डी. आई. पी. एक्ट

03, फरवरी, 1914 को विस्तृत वनस्पति संगरोध अधिनियम (विनाशकारी कीट और कीट अधिनियम—1914) भारत सरकार द्वारा लागू किया गया ।

1936-43

पौधों , कीड़े एवं कवक के आयात को विनियमित करना

भारत में पौधों (1936 में), कीड़े (1941 में) और कवक (1943 में) के आयात को विनियमित करने के उद्देश्य से सम्बंधित नियम राजपत्र अधिसूचना के माध्यम से जारी किये गए ।

1946

आई.ए.आर.आई. द्वारा वनस्पति संगरोध गतिविधियों की शुरुआत

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (आई.ए.आर.आई.) नई दिल्ली के वनस्पति विज्ञान प्रभाग में पादप संगरोध गतिविधि की शुरुआत वर्ष 1946 में वनस्पति प्रवेश योजना के आरंभ से हुई।

1949

डी.पी.पी.क्यू.एस. द्वारा वनस्पति संगरोध गतिविधियों की शुरुआत

निदेशालय द्वारा बंबई बंदरगाह पर संगरोध गतिविधियों की शुरुआत वर्ष 1949 में की गयी।

जारी.....

सेमिनार एवं कार्यशाला

अफ्रीकी स्नेल (एकैटिना फुलिका) के उन्मूलन हेतु सामूहिक अभियान

सी.आई.पी.एम.सी, एर्नाकुलम ने केरल राज्य कृषि विभाग के सहयोग से अफ्रीकी स्नेल (एकैटिना फुलिका) के निवारण के लिए सामूहिक उन्मूलन अभियान का आयोजन किया। चेन्नम पल्लिपुरम कृषि भवन, अलप्पुझा द्वारा पल्लिपुरम पंचायत हॉल में आयोजित कार्यक्रम में श्री. टॉम चेरियन, एपीपीओ (की.वि.) ने "अफ्रीकी घोंघा (एकैटिना फुलिका) का प्रबंधन और उन्मूलन" पर व्याख्यान दिया।

मसालों में IPM आउटरीच कार्यक्रम

- स्पाइसेज़ बोर्ड के 26वें स्थापना दिवस पर मसाला पार्क, पुट्टाडी, इडुक्की जिला, केरल में इलायची निर्यातकों के लिए दिनांक 27 फरवरी 2023 को आयोजित कार्यक्रम में श्री मिलू मैथ्यू, पीपीओ (पीपी), सी.आई.पी.एम.सी एर्नाकुलम ने छोटी इलायची (एलेटेरिया कार्डेमोमम) में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन विषय पर व्याख्यान दिया।
- सी.आई.पी.एम.सी,एर्नाकुलम ने "बाइसन वैली स्पाइस प्रोड्यूसर्स को-ऑपरेटिव सोसाइटी", इडुक्की के सदस्यों के लिए मसालों में एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन और बायो-कंट्रोल एजेंटों के बड़े पैमाने पर उत्पादन पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन दिनांकः 15.03.2023 किया ।

एपीडा एवं डी.पी.पी.क्यू.एस. द्वारा दिनांक: 28.03.2023 को कोलकाता में पूर्वी क्षेत्र के लिए निर्यात एवं फाइटोसैनिटरी मुद्दों पर कार्यशाला का आयोजन

बायोकंट्रोल एजेंटों के बड़े पैमाने पर उत्पादन पर प्रशिक्षण

आर.सी.आई.पी.एम.सी, नागपुर ने दिनांक 01.02.2023 को नागपुर क्षेत्र के 40 कृषि अधिकारियों के लिए ट्राइकोग्रामा और ट्राइकोडर्मा के बड़े पैमाने पर उत्पादन विषय पर प्रशिक्षण का आयोजन किया ।

कीटनाशकों/एमआरएल के सुरक्षित और विवेकपूर्ण उपयोग पर प्रशिक्षण

डी.जी.आई.एम, नागपुर द्वारा आयोजित कार्यक्रम में श्री किरण देशकर, संयुक्त निदेशक, आर.सी.आई.पी.एम.सी. नागपुर ने दिनांक 09.01.2023 को नाशीजीवनाशकों/एमआरएल के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर व्याख्यान दिया । इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

निर्यातकों के साथ कोकोनट कॉयर कस्टमर मीटिंग

कोचीन पोर्ट अथॉरिटी एवं डीपी वर्ल्ड द्वारा दिनांकः25.02.02023 को कोयम्बटूर के पास पोलाची में "कोकोनट कॉयर कस्टमर मीट विथ एक्सपोर्टर्स" का आयोजन किया गया , इस मीटिंग में पी.क्यू.एस, कोयम्बटूर ने वनस्पति संगरोध से संबंधित मुद्दों पर चर्चा के साथ निर्यातकों के बीच जागरूकता भी पैदा की।

कृषि महोत्सव

दिनांकः24-25 जनवरी 2023 की अवधि में कोटा, राजस्थान में आयोजित कृषि महोत्सव: प्रदर्शनी एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम में निदेशालय के द्वारा रोचक एवं ज्ञानवर्धक स्टाल लगाया गया ।

इस दौरान 3500 से अधिक किसानों, विद्यार्थियों एवं गणमान्य व्यक्तियों ने निदेशालय के स्टाल का भ्रमण कर एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन (आईपीएम) की विभिन्न पद्धतियों के बारे में जानकारी प्राप्त किया । किसानों को आईपीएम पर पैम्फलेट और बुकलेट भी बांटे गए। निदेशालय को कृषि और किसान कल्याण मंत्रालय से भागीदारी प्रमाण पत्र भी प्राप्त हुआ।

कृषि ओडिशा 2023 में भागीदारी

दिनांक 16-18 फरवरी 2023 तक आयोजित कृषि ओडिशा 2023 में सी.आई.पी.एम.सी. भुवनेश्वर द्वारा भागेदारी की गयी। इस कार्यक्रम का आयोजन कृषि और किसान अधिकारिता विभाग (ओडिशा सरकार) एवं फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री द्वारा किया गया था ।

कृषि मेला और तिलहन मेला में भागीदारी

कृषि विज्ञान केंद्र, बहराईच द्वारा दिनांक 03-03-2023 को आयोजित कृषि मेला एवं कृषि विज्ञान केंद्र, धौरा, उन्नाव द्वारा 04.03.2023 को आयोजित, तिलहन मेला में आर.सी.आई.पी.एम.सी. लखनऊ द्वारा भागेदारी की गयी ।

विशिष्ट उपलब्धि एवं समारोह

के.वी.के., बसैठ मधुबनी द्वारा आयोजित कृषि एवं स्वास्थ्य अमृत महोत्सव तथा मेगा एग्री एक्सपो-2023 में भागीदारी

बिहार के मधुबनी जिले में कृषि विज्ञान केंद्र, बसैठ द्वारा 11 से 13 फरवरी, 2023 तक "कृषि एवं स्वास्थ्य अमृत महोत्सव तथा मेगा एग्री एक्सपो -2023" का आयोजन किया गया । इस मेला में सी.आई.पी.एम.सी., पटना द्वारा लगाये गए स्टाल को पूर्व केंद्रीय राज्य मंत्री श्री हुकुम देव नारायण यादव के हाथों सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनी स्टॉल का पुरस्कार मिला ।

एन.बी.ए.आई.आर. सम्मेलन में मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार

आईसीएआर- राष्ट्रीय कृषि कीट संसाधन ब्यूरो, बेंगलुरु, भारत एवं सोसाइटी फॉर बायोकंट्रोल एडवांसमेंट, बेंगलुरु, द्वारा 15-17 दिसंबर 2022 के दौरान "जैविक नियंत्रण पर 7वें राष्ट्रीय सम्मेलन: कृषि में नाशीजीव के जैविक नियंत्रण के 75 साल - चुनौतियां और आगे का रास्ता" विषय पर चर्चा आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में डॉ. रंजीथ एम, एपीपीओ (ई), आर.सी.आई.पी.एम.सी., बेंगलुरु को उनके प्रस्तुति के लिए सर्वश्रेष्ठ मौखिक प्रस्तुति पुरस्कार प्रदान किया गया।

भारत के राजपत्र --- महत्वपूर्ण अधिसूचनाएं

कीटनाशक अधिनियम, 1968/कीटनाशी नियम, 1971 के तहत

1.का.आ.701(अ) दिनांक 02.02.2023- (1) तीन कीटनाशकों डाइकोफोल, डाइनोकैप और मेथोमाइल के निषेध और (2) कार्बोफ्यूरान, मैलाथियान, मोनोक्रोटोफॉस, क्विनालफॉस, मैनकोजेब, ऑक्सीफ्लोरफेन, डायमेथोएट और क्लोरपाइरीफॉसका कुछ फसलों से लेबल दावे को हटाने के लिए मसौदा अधिसूचना।

2. सा.का.नि. 140(अ) दिनांक 24.02.2023 - कीटनाशक निर्माण इकाइयों में नियोजित किये जाने वाले व्यक्ति की योग्यता की अधिसूचना;

तकनीकी ग्रेड कीटनाशकों के निर्माण के लिए- डॉक्टरेट केमिस्ट्री या एग्रीकल्चर केमिस्ट्री या एग्रीकल्चर केमिकल्स या मास्टर ऑफ टेक्नोलॉजी या मास्टर ऑफ साइंस इन केमिकल इंजीनियरिंग या समकक्ष।

कीटनाशक योगों के निर्माण के लिए - एक विषय के रूप में रसायन विज्ञान के साथ कृषि या विज्ञान में स्नातक डिग्री

3. सा.का.नि. 173(अ) दिनांक 07.03.2023 - कीटनाशी नियम, 1971 में मसौदा अधिसूचना, नियम 10 में, उप-नियम (1क) में, पहले परंतुक में, अंक, अक्षर और शब्द "31 दिसंबर, 2022" के लिए अंक, अक्षर और शब्द " 31 दिसंबर, 2023" को प्रतिस्थापित किया जाएगा।

4. सा.का.नि. 172(अ) दिनांक 07.03.2023 - मसौदा नियम-

(क) शब्दों का प्रतिस्थापन (i) भारतीय अनाज भंडारण संस्थान, हापुड़ से भारतीय अनाज भंडारण प्रबंधन और अनुसंधान संस्थान, हापुड़ और राष्ट्रीय वनस्पति संरक्षण प्रशिक्षण संस्थान, हैदराबाद से राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान, हैदराबाद।

(ख) कोई भी व्यक्ति जो केवल ग्लाइफोसेट और उसके संजातो का उपयोग करके कीट नियंत्रण संचालन के लिए लाइसेंस देने के लिए आवेदन करता है, उसे निम्नलिखित संस्थानों में से किसी से विशेष रूप से ग्लाइफोसेट के उपयोग के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा - किसी भी राज्य कृषि विश्वविद्यालय या कृषि विज्ञान केंद्र या राष्ट्रीय वनस्पति स्वास्थ्य प्रबंधन संस्थान, हैदराबाद या राज्य कृषि प्रबंधन और विस्तार प्रशिक्षण संस्थान या केंद्रीय या राज्य कृषि अनुसंधान संस्थान या किसी अन्य सरकारी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्थान या केंद्रीय या क्षेत्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन केंद्र (सीआईपीएमसी) एनआईपीएचएम पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण कार्यक्रम की निगरानी के लिए नोडल एजेंसी के रूप में रहेगा।

5. सा.का.नि. 211(अ) दिनांक 17.03.2023- कीटनाशकों की खुदरा पैकेजिंग में क्यूआर कोड और लेबलिंग के संबंध में अधिसूचना।

74वें गणतंत्र दिवस के समारोह में

26 जनवरी 2023 को निदेशालय में 74वां गणतंत्र दिवस मनाया गया। इस अवसर पर डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति संरक्षण सलाहकार ने तिरंगा फहराया एवं हमारे संविधान निर्माताओं का स्मरण कर उनके महत्वपूर्ण योगदान पर चर्चा किया गया । कार्यक्रम में निदेशालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित थे।

आम निर्यात के महत्वपूर्ण चरण

नमस्कार महोदय, क्या आप यूरोपीय संघ के देशों और संयुक्त राज्य अमेरिका में आम के निर्यात के लिए मेरा मार्गदर्शन कर सकते हैं...?

पादप स्वच्छता पहलुओं पर एक नज़र

ज़रूर...! आपका सहयोग कर मुझे ख़ुशी होगी

प्रक्रिया

1.

राज्य बागवानी विभाग के साथ आम के बागों का पंजीकरण और बागों में नाशीजीव का प्रबंधन।

2.

पैक हाउस और उपचार सुविधा पंजीकरण

3.

नाशीजीव मुक्त उत्पाद/फल

उपचार एवं नाशीजीव से मुक्ति

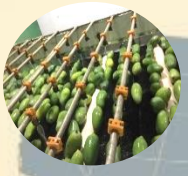

गर्म पानी के साथ फल के सतह का कीटाणुशोधन

&

विकिरण

गर्म जल उपचार

OR

वाष्प ताप उपचार

निर्यात से पहले पादप स्वच्छता प्रमाणपत्र प्राप्त करें

विशेष जानकारी के लिए https://pqms.cgg.gov.in/pqms-angular/ पर विजिट करें

निदेशालय एवं अधीनस्थ कार्यालयों में 01 मार्च, 2023 से 08 मार्च, 2023 तक अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह मनाया गया । कार्यक्रम के दौरान निदेशालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने लैंगिक समानता पर शपथ लेने के साथ ही वृक्षारोपण सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया । महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण में प्रत्यक्ष परिवर्तन लाने के साथ-साथ लिंग आधारित हिंसा और भेदभाव को समाप्त करने वाली लैंगिक समानता एवं सुग्राहीकरण पर चर्चा के साथ अंतर्राष्ट्रीय महिला सप्ताह आयोजन समाप्त हुआ । इसी तरह के कार्यक्रम निदेशालय के उप कार्यालयों में भी मनाए गए।

निदेशालय के कांफ्रेंस हॉल में लैंगिक समानता की शपथ

@ अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस आर.सी.आई.पी.एम.सी. कोलकाता

सी. आई. बी. आर.सी. परिसर में वृक्षारोपण

लैंगिक समानता एवं सुग्राहीकरण पर चर्चा

आई.पी.एम. में मानव संसाधन विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

ग्रुप डायनामिक्स

क्षेत्र सर्वेक्षण @ आर.सी.आई.पी.एम.सी., लखनऊ

बीज उपचार प्रदर्शन @ आर.सी.आई.पी.एम.सी., गुवाहाटी

वर्मी कम्पोस्ट शेड का भ्रमण @ आर.सी.आई.पी.एम.सी., नागपुर

क्षेत्र सर्वेक्षण @ आर.सी.आई.पी.एम.सी., बंगलोर

सी.एस.एस.आर.आई. करनाल में व्याखान @ आर.सी.आई.पी.एम.सी., फ़रीदाबाद

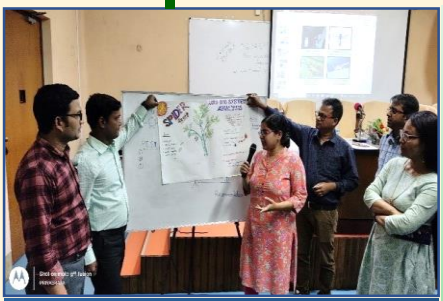

ए.ई.एस.ए. चार्ट प्रस्तुती@ आर.सी.आई.पी.एम.सी., कोलकाता

कुल छह, पाँच दिवसीय मानव संसाधन विकास कार्यक्रम आयोजित किए गए जिसमें विभिन्न राज्यों के 243 कृषि विस्तार अधिकारियों को आई.पी.एम. तकनीक पर प्रशिक्षित किया गया ।

दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

सी.आई.पी.एम.सी. भुवनेश्वर द्वारा बायोकंट्रोल एजेंट की तैयारी और उनके उपयोग का प्रदर्शन।

आर.सी.आई.पी.एम.सी., फरीदाबाद द्वारा आई.पी.एम. प्रदर्शनी स्टाल ।

कुल 47, दो दिवसीय एच.आर.डी. कार्यक्रम आयोजित किए गए जहां 2577 ए.ई.ओ.,एन.जी.ओ., अग्रणी किसानों, निजी उद्यमियों को आईपीएम तकनीक पर प्रशिक्षित किया गया।

सी.आई.पी.एम.सी., त्रिची द्वारा कीट नमूनों के एकत्रीकरण का प्रदर्शन।

सी.आई.पी.एम.सी., विजयवाड़ा द्वारा मिलीबग से बचाव के लिए आम के पेड़ की बैंडिंग का प्रदर्शन ।

किसान खेत पाठशाला

सी.आई.पी.एम.सी., एर्नाकुलम द्वारा बनाना स्यूडो स्टेम बोरर के ट्रैप इंस्टालेशन का प्रदर्शन।

सी.आई.पी.एम.सी., शिलांग द्वारा मृदा सौरीकरण (सोलोराईजैसन) का प्रदर्शन।

रबी सीजन में 230 एफ.एफ.एस. आयोजित किए गए जिसमें 8050 किसानों को आईपीएम तकनीक के बारे में प्रशिक्षित किया गया।

सी.आई.पी.एम.सी., नासिक द्वारा मृदा नमूना एकत्रीकरण का प्रदर्शन।

सी.आई.पी.एम.सी., देहरादून द्वारा फेरोमोन ट्रैप के उपयोग का प्रदर्शन।

द्विपक्षीय फाइटोसेनेटरी समझौता

डॉ. रंजीत सिंह, निदेशक (पीपी), कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, डॉ. सी.एस. पाटनी, उप निदे. (व.रो.वि.) और डॉ. माइकल राजा, स. निदे. (की.वि.) ने न्यूज़ीलैंड से भारत को कीवानो फलों के निर्यात के अनुमति के लिये न्यूज़ीलैंड में कीवानो फलों के निर्यात पूर्व सिस्टम एप्रोच का ऑनसाइट ऑडिट दिनांकः 20-22 फरवरी 2023 के दौरान किया।

खपत के लिए मक्का अनाज को बाजार प्रदान करने के संबंध में द्विपक्षीय मुद्दों पर चर्चा करने के लिए भारत-कनाडा वनस्पति स्वास्थ्य तकनीकी कार्य समूह कार्यशाला दिनांकः02 मार्च 2023 को आयोजित की गई थी।

इस कार्यशाला में श्री आशीष कुमार श्रीवास्तव, संयुक्त सचिव (पीपी), डॉ. रंजीत सिंह, निदेशक (पीपी), डॉ. जे.पी. सिंह, वनस्पति सं. सलाहकार, डॉ. ज्ञानसंबंधन, सं. निदे. (व.सं.), श्रीमती कामिनी तांडेकर, उप निदे. (पीपी), डॉ. माइकल राजा, स. निदे. (की.वि.) और डॉ रमन्ना कौलागी, स. निदे. (की.वि.) तथा कनाडाई खाद्य निरीक्षण एजेंसी के प्रतिनिधि

प्रकाशन

- J. Raju, P.R. Thimmegowda, S.N. Shivakumar, Sivarama Krishnan, C. Elangovan, Sunitha Pandey and J.P. Singh (2023), Rice false smut disease: An emerging threat to the paddy growers in Tamil Nadu, *Journal of Eco-friendly Agriculture*, 18(1): 200-202.
- Agnes Jose & Milu Mathew (2022): Effects of Entomopathogenic fungus, *Isaria fumosorosea* on *Aphis gossypii Glov*. *J. ent.Res.* 46 (Suppl): 977-980.

गणमान्य अतिथियों का भ्रमण

श्री विवेक सिंह, निदेशक (कृषि), श्री टी.पी. चौधरी, अपर कृषि निदेशक (पीपी), उत्तर प्रदेश सरकार ने दिनांकः06 फरवरी, 2023 को आर.सी.आई.पी.एम.सी., लखनऊ के जैव -नियन्त्रक प्रयोगशालाओं का दौरा किया।

मीडिया कवरेज

डॉ. वी.डी. निगम, उप निदे. (की.वि.) ने डीडी किसान चैनेल पर गेहूं में गुलाबी स्टेम बोरर से होने वाले नुकसान और लक्षणों और आईपीएम तकनीक के उपयोग करके इसके प्रबंधन पर एक व्याख्यान दिया।

डॉ. के. एल. गुर्जर, सं निदे. (व.रो.वि.) ने डीडी किसान चैनेल पर गेहूं की फसल में रतुआ रोग के एकीकृत प्रबंधन पर व्याख्यान दिया।

सफलता की कहानी

किसान द्वारा जैव नियंत्रण प्रयोगशाला की स्थापना

गाँव- कोशिम्बा, तालुका: डिंडोरी, जिला-नासिक के एक प्रगतिशील किसान श्री राजीव ओझा, पॉलीहाउस में शिमला मिर्च उगा रहे हैं। उन्होंने ट्राइकोग्रामा स्पीशीज, एंथोकोरिड बग , ग्रीन लेस विंग (क्राइसोपरला कार्निया) जैसे विभिन्न जैव-नियन्त्रक एजेंटों के उत्पादन का प्रशिक्षण भी ले रखा था । सी.आई.पी.एम.सी., नासिक द्वारा उपरोक्त किसान के क्षेत्र का भ्रमण कर श्री राजीव ओझा को जैव-नियन्त्रक एजेंटों के बड़े पैमाने पर उत्पादन के लिए आवश्यक जानकारी एवं सलाह प्रदान किया । अब श्री ओझा बड़े स्तर पर जैव-नियन्त्रको का उत्पादन करने के साथ ही खेती में आई.पी.एम. तकनीक का उपयोग सफलतापूर्वक कर रहें है ।

प्रकाशित:

वनस्पति संरक्षण सलाहकार
वनस्पति संरक्षण संगरोध एवं संग्रह निदेशालय,
सीजीओ कॉम्प्लेक्स, एनएच-IV, फरीदाबाद, हरियाणा -121001
दूरभाष: 0129-2413985, ईमेल:-ppa@nic.in ट्विटर: @PPAIndia

डिज़ाइन एवं संकलनकर्ता:

श्री ज्ञानेश्वर बंछोर, उप निदेशक (की.वि.), श्री बी बी कुमार, व.सं.अधि. (ख.वि.), श्री विशाल एल गटे, व.सं.अधि. (व.रो.वि.), डॉ. संतोष पी. पटोले, व.सं.अधि. (व.रो.वि.) सुश्री भावना आर. सिंह, सहा.व.सं.अधि. (की.वि.), और श्री रोहित एम, सहा.व.सं.अधि. (व.रो.वि.)